1

पुराने नियम में धार्मिक संस्कार व समझ

''क्योंकि तू मेलबलि में प्रसन्न नहीं होता, नहीं तो मैं देता; होमबलि से भी तू प्रसन्न नहीं होता। टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता'' (भजन संहिता 51:16, 17)।

इस तथ्य पर आधारित कि बपतिस्मे के कार्य में अपने आप में पाप मिटाने की कोई सामर्थ या योग्यता नहीं है, कई लोग इसे औपचारिकता या धार्मिक संस्कार से ज्यादा कुछ नहीं मानते। बपतिस्मे की प्रकृति को निर्धारित करने के लिए यह प्रश्न पूछा जाना चाहिए, ''पुराने या नये नियम में क्या कोई ऐसा कार्य है जिसमें परमेश्वर से सम्बन्ध बनाने के लिए बिना किसी उद्देश्य के कोई औपचारिकता, सेक्रामेन्ट [एक धार्मिक रीति] या संस्कार हो?'' क्या परमेश्वर आदमी द्वारा किए गए किसी कार्य को बिना उसके मन में झांके यूं ही स्वीकार कर सकता है?

परमेश्वर की बात मानने के सभी कार्यों में एक जैसे सिद्धांत नहीं होते। परमेश्वर के सामने स्वीकार्य होने के लिए या परमेश्वर से आशीष पाने के लिए कम से कम पांच सिद्धांत आवश्यक हैं:

(1) कोई *आशीष मानवीय गुण के कार्य के बिना* व्यक्ति के विश्वास के आधार पर दी जा सकती है।

(2) आशीष बिना कुछ पूछे *आज्ञा मानने वाले अर्थात किसी आशीष में विश्वास या बिना समझे कार्य में विश्वास* के आधार पर दी जा सकती है।

(3) *आशीष पाने के लिए विश्वास से किए कार्य* के आधार पर आशीष दी जा सकती है।

(4) आशीष *स्वयं उस लाभ को नहीं पा सकने वाले विश्वास के आधार पर दी जा सकती है।* हो सकता है कि ऐसे कार्य में जिस आशीष की उम्मीद की गई थी उससे कोई सम्बन्ध न हो, लेकिन उस लाभ को उपलब्ध कराने के लिए परमेश्वर में विश्वास रखकर उसे पाने की कोशिश की जाती है।

(5) आशीष या परिपूर्णता विश्वास रखने वाले के बजाय *दूसरे लोगों को* दी जा

सकती है।

इन पांच सिद्धांतों में से चार में (बिना कुछ पूछे आज्ञा मानना छोड़कर) किसी न किसी प्रकार आशीष पाने का आधार विश्वास ही होता है; परन्तु, परमेश्वर को प्रसन्न करने और आशीष पाने के लिए समझ तथा आवश्यक व्यवहार परमेश्वर की शर्तों के अनुसार भिन्न हो सकता है। बाइबल के कुछ उदाहरणों पर विचार कीजिए:

(1) बिना किसी मानवीय गुण के विश्वास

इब्राहीम के जीवन की एक घटना से विश्वास पर आधारित परन्तु मानवीय कार्य या गुण के बिना आशीष का एक उदाहरण मिलता है। परमेश्वर ने इब्राहीम को बताया कि उसकी संतान आकाश के तारों की तरह अनगिनत होगी। ''उसने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना'' (उत्पत्ति 15:6)। यहां परमेश्वर ने इब्राहीम से किसी कार्य की अपेक्षा नहीं की थी, परन्तु उसके विश्वास के आधार पर उसे धर्मी माना गया।

(2) बिना कुछ पूछे आज्ञा मानना

बिना कुछ पूछे आज्ञा मानने का उदाहरण 2 राजा 13:14-19 में मिलता है। एलीशा ने योआश राजा से कहा कि खिड़की खोलकर पूर्व की ओर तीर छोड़ दे। योआश ने तीर छोड़ दिया। एलीशा ने कहा ''यह तीर यहोवा की ओर से छुटकारे अर्थात छुटकारे का चिह्न है, इसलिए तू अराम को यहां तक मार लेगा कि उनका अन्त कर डालेगा'' (2 राजा 13:17)। फिर एलीशा ने राजा योआश से तीर को भूमि पर मारने के लिए कहा। योआश ने तीन बार तीर भूमि पर मारा। एलीशा ने उससे कहा, ''तुझे तो पांच छह बार मारना चाहिए था, ऐसा करने से तो तू अराम को यहां तक मारता कि उनका अन्त कर डालता, परन्तु अब तू उन्हें तीन ही बार मारेगा'' (2 राजा 13:19)।

योआश द्वारा किया गया कार्य परमेश्वर की ओर से मिली आशीष में *विश्वास* करने का नहीं, बल्कि *बिना कुछ पूछे आज्ञा मानने* का उदाहरण है, एलीशा योआश को तीर छोड़ने और भूमि पर मारने का *उद्देश्य* बता सकता था; तब योआश का कार्य परमेश्वर से मिली आशीष में विश्वास का कार्य होता और परमेश्वर आज्ञा मानने के लिए उसे विजय देने के अपने वायदे को पूरा कर रहा होता। उसे न तो बताया गया था और न ही उसे परमेश्वर की आज्ञा मानने से मिलने वाली आशीष की समझ थी, इसलिए वह अपने कार्यों का पुरस्कार पाने के लिए परमेश्वर में विश्वास *नहीं* रख पाया। उसके कार्य बिना कुछ पूछे आज्ञा मानने का परिणाम थे।

(3) प्राप्त करने के लिए विश्वास और कार्य

विश्वास का एक उदाहरण जो लोगों को लाभ *पाने* के लिए कार्य करने की प्रेरणा देता है, वह है नूह का जहाज़ बनाना। नूह जहाज़ बनाने और अपने परिवार को आने वाली जल

प्रलय से बचाने के सम्बन्ध को समझ सकता था, परन्तु वह परमेश्वर की ओर से मिले प्रकाशन के बिना अपने परिवार को जल प्रलय से बचाने के लिए जहाज बनाने की आवश्यकता को *नहीं* जान सकता था। उसके लिए परमेश्वर में विश्वास रखना कि जल प्रलय आ रहा है और उस विश्वास से प्रेरणा पाकर एक जहाज बनाना आवश्यक था जो उसे, उसके परिवार और दूसरे बहुत से जीवित प्राणियों को सुरक्षित ले जा सके। उसे विश्वास के कारण लाभ *प्राप्त* करने वाला कार्य करने की प्रेरणा मिली थी, जिससे वह और दूसरे लोग बचाए गए थे। परमेश्वर जहाज़ को बनाकर सुरक्षित स्थान पर नहीं ले गया था। जहाज़ बनाना नूह का काम था और प्रलय के पानी ने जहाज़ को तैराया।

(4) विश्वास तथा कार्य से जो नहीं मिल सकता

जिस विश्वास से *प्राप्त होता है* उसमें वह आशीष भी शामिल होती है जो परमेश्वर में विश्वास रखने वाले व्यक्ति को मिलती है लेकिन उसे यह अहसास होता है कि उसके कार्य का प्रतिज्ञा की हुई आशीष से कोई तर्कसंगत सम्बन्ध नहीं है। इस्राएल के लोगों का यरीहो की दीवारों के आस पास चक्कर लगाना इसका एक अच्छा उदाहरण है। परमेश्वर में उनका विश्वास केवल दीवारों को गिराने में ही नहीं बल्कि चलते हुए अपेक्षित परिणामों के बीच कोई स्पष्ट सम्बन्ध देखे बिना विश्वास के एक कार्य के रूप में आगे बढ़ना था।

ऐसी घटनाओं में, विश्वास करने वाले को पता होता है कि उसके कार्यों से आशीष *प्राप्त* नहीं की जा सकती; इसलिए वह परमेश्वर द्वारा की गई प्रतिज्ञा को *पाने* के लिए परमेश्वर में विश्वास रखकर कार्य करता है। विश्वास के ऐसे कार्यों की आवश्यकता होने पर, प्रतिज्ञा की हुई आशीष की समझ होना आवश्यक है; वरना, वह केवल बिना कुछ पूछे ही आज्ञा मान सकता है। हो सकता है कि उसे पता न हो कि परमेश्वर इसे कैसे पूरा करेगा या जो कुछ उसे करना पड़ रहा है उसे क्यों करता है, परन्तु यह समझ होनी आवश्यक है कि उस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए वह परमेश्वर में विश्वास रखकर काम कर सकता है। *यदि कोई व्यक्ति प्रतिज्ञा की हुई वस्तु को पाने के लिए कार्य नहीं करता, तो वह कार्य उस प्रतिज्ञा से असम्बद्ध नहीं है और, इसलिए वह कार्य प्रतिज्ञा करने वाले में विश्वास का नहीं है*।

(5) विश्वास जिससे दूसरों को लाभ होता है।

परमेश्वर ने इब्राहीम, इसहाक और याकूब से प्रतिज्ञा की कि कनान देश उनके वंशजों को दिया जाएगा (उत्पत्ति 12:7; 26:3; 35:12)। उन्हें विश्वास था कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेगा बेशक *यह आशीष दूसरों को मिलनी थी*। ''ये सब विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं नहीं पाई; पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया, कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं'' (इब्रानियों 11:13)।

इब्रानियों की पत्री में हमें उस विश्वास के लाभ के अतिरिक्त उदाहरण भी मिलते हैं जो केवल दूसरों को ही मिलना था: ''विश्वास ही से इसहाक ने याकूब और एसाव को आने वाली बातों के विषय में आशीष दी। विश्वास ही से याकूब ने मरते समय यूसुफ के दोनों पुत्रों

में से एक को आशीष दी, और अपनी लाठी के सिरे पर सहारा लेकर दण्डवत किया। विश्वास ही से यूसुफ ने, जब वह मरने पर था, तो इस्राएल की सन्तान के निकल जाने की चर्चा की, और अपनी हड्डियों के विषय में आज्ञा दी'' (इब्रानियों 11:20-22)। इन लोगों का विश्वास उन आशिषों में था जो उन्हें नहीं बल्कि दूसरे लोगों को मिलनी थीं।

पुराने नियम में विश्वास के उदाहरण

इब्रानियों 11 में पुराने नियम के समय के उन लोगों के उदाहरण दिए गए हैं जिन्हें अपने विश्वास के कारण आशीष मिली थी। हर आशीष में नीचे दिए गए तत्व थे: (1) परमेश्वर की ओर से आज्ञा या कथन, (2) परमेश्वर की कही बात की समझ, (3) मनुष्य की ओर से अनदेखी वस्तु, (4) मनुष्य द्वारा परमेश्वर के वचन को स्वीकार किया जाना, और (5) आवश्यक हो तो उसके लिए मनुष्य की उचित क्रिया। किसी भी घटना में विश्वास के लिए बिना कुछ पूछे आज्ञा मानने अर्थात कार्य में विश्वास तथा उससे जुड़ी प्रतिज्ञा की समझ के बिना कार्य की आवश्यकता नहीं थी।

हाबील

''विश्वास ही से हाबील ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिए चढ़ाया ...'' (इब्रानियों 11:4)। हाबील का बलिदान कैन के बलिदान से उत्तम होने के बारे में बहुत से प्रश्न उठे हैं।

कई लोगों का मानना है कि समस्या *बलिदान के प्रकार की* नहीं बल्कि *व्यवहार* की थी। परन्तु, शास्त्र में लिखा है कि बलिदान में अन्तर था; हाबील ने कैन से ''उत्तम बलिदान'' चढ़ाया। दूसरे लोगों ने यह बात उठाई कि जो बलिदान कैन ने चढ़ाया अर्थात उपज की भेंट, उसकी *व्यवस्था* में अनुमति दी गई थी (लैव्यव्यवस्था 2:1-16)। यह सच हो सकता है, परन्तु क्या ऐसे बलिदान व्यवस्था दिए जाने से *पहले* मान्य थे?

व्यवस्था दिए जाने से पहले केवल जानवरों के बलिदानों (कैन का बलिदान एक अपवाद है) का ही उल्लेख मिलता है। जहाज़ से निकलने के बाद, ''नूह ने ... सब शुद्ध पशुओं, और सब शुद्ध पक्षियों में से कुछ कुछ लेकर वेदी पर होमबलि चढ़ाया'' (उत्पत्ति 8:20)। इब्राहीम ने बलिदान में एक मेढ़ा भेंट किया (उत्पत्ति 22:13)। इसहाक की बात से संकेत मिलता है कि सामान्यत: जानवर का बलिदान दिया जाता था, क्योंकि जब इब्राहीम ने बलि के लिए जगह देखी, तो इसहाक ने उससे पूछा, ''... होमबलि के लिए भेड़ कहां है?'' (उत्पत्ति 22:7)। मूसा ने फिरौन को बताया कि इस्राएलियों को बलिदानों के लिए पशुओं की आवश्यकता है (निर्गमन 10:25)। और भी बहुत से पद हैं जो यह उल्लेख किए बिना कि भेंट क्या किया गया, बलिदानों का उल्लेख करते हैं (उत्पत्ति 31:54; 46:1; अय्यूब 1:5)।

इस तथ्य से कि व्यवस्था दिए जाने से पहले केवल जानवरों के बलिदानों की भेंट के बारे में ही बताया गया है, यह संकेत मिलता है कि परमेश्वर ने *पशुओं* के बलिदानों की

आज्ञा दी थी। परमेश्वर की प्रकट इच्छा में विश्वास से (नोट रोमियों 10:17), हाबील ने वही बलिदान भेंट किया जो परमेश्वर की इच्छा थी, लेकिन कैन ने अपनी पसन्द से बलिदान भेंट किया जो कि परमेश्वर की आज्ञाकारिता का कार्य नहीं था।

हाबील ने अपना बलिदान विश्वास से चढ़ाया, इसलिए उसकी भेंट बिना सोचे-समझे आज्ञा मानने का कार्य *नहीं* था। या तो यह परमेश्वर की आराधना के उद्देश्य के लिए था, जिसकी अधिक सम्भावना है या पाप की भेंट के लिए।

नूह

नूह बिना सोचे-समझे नहीं बल्कि विश्वास से कार्य करने का एक उदाहरण है। परमेश्वर से मिली चेतावनी के कारण, वह जानता था कि वह जहाज़ क्यों बना रहा है (उत्पत्ति 6:13-22)। आने वाले जल प्रलय के बारे में तथा जहाज़ बनाकर परिवार को बचाने के लिए जो कुछ परमेश्वर ने उसे बताया था, उसने उस पर विश्वास किया। उसने जहाज़ *एक उद्देश्य* अर्थात अपने आपको, अपने परिवार, और जहाज़ में आने वाले हर जीव तथा जीवित प्राणी को बचाने के लिए बनाया था। यदि वह जहाज़ इसलिए बनाता कि परमेश्वर ने उसे बनाने के लिए कहा है, परन्तु, जल प्रलय की तैयारी के बजाय वह इसे अपने रहने के लिए ही बनाता, तो परमेश्वर को पता चल जाता कि वह गलत उद्देश्य से कार्य कर रहा है और निस्संदेह वह उसके कार्य को स्वीकार न करता।

इब्राहीम

इब्राहीम बिना सोचे-समझे नहीं बल्कि विश्वास से कार्य करने वालों का एक और उदाहरण है। बेशक उसे अपनी मंज़िल को जानने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि परमेश्वर ने उसे उसका मार्ग बताना था (उत्पत्ति 12:1-4), परन्तु उसका विश्वास था कि यदि वह परमेश्वर की बताई गई जगह पर जाए तो परमेश्वर उसे आशीष देने और उसे एक बड़ी जाति बनाने की प्रतिज्ञा को पूरा करेगा। वह परमेश्वर की प्रतिज्ञा को समझता था और उस पर विश्वास करता था। यदि परमेश्वर ने उसे *न* बताया होता कि बाहर जाकर क्या करना है या उसे केवल बाहर जाने के लिए ही कहता, तो उसका कार्य बिना सोचे-समझे आज्ञा मानना होता, परन्तु वह समझ रखता था, अत: उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा में विश्वास रखकर काम किया।

यदि इब्राहीम धनी व शक्तिशाली बनने, रिश्तेदारों से दूर भागने, कोई साहसिक कार्य करने के लिए या किसी और कारण से बाहर निकलता, तो उसका जाना गलत उद्देश्य के लिए होना था। निश्चय ही ऐसे किसी कार्य के लिए परमेश्वर उसे प्रतिफल *न* देता, क्योंकि मन को जांचने वाला परमेश्वर जान जाता कि इब्राहीम अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के परमेश्वर में विश्वास के बिना गलत उद्देश्य से जा रहा है।

यहोशू और इस्राएल

''विश्वास ही से यरीहो की शहरपनाह, जब सात दिन तक उसका चक्कर लगा चुके तो वह गिर पड़ी'' (इब्रानियों 11:30)। इस्राएल ने बिना सोचे-समझे नहीं बल्कि इसलिए आज्ञा मानी क्योंकि उन्हें पता था और उनका विश्वास परमेश्वर की प्रतिज्ञा में है यदि वे उनके चक्कर काटें तो वे दीवारें गिर पड़ेंगी (यहोशू 6:1-5)। यदि परमेश्वर ने उन्हें केवल चलने के लिए ही कहा होता और यह न बताया होता कि उनके आगे बढ़ने से क्या होगा, तो उनका कार्य केवल बिना सोचे-समझे आज्ञा मानना होता, दीवारों को गिराने के लिए परमेश्वर में विश्वास नहीं।

इस उदाहरण में हमें आशीष *पाने* तथा आशीष *प्राप्त करने* के लिए किए गए कार्य में विषमता दिखाई देती है। यदि इस्राएली किले की दीवार तोड़ने के यन्त्र लेकर दीवारों को गिरा देते, तो यह आशीष को *प्राप्त करने* का कार्य होता। इसके विपरीत उन्होंने अपेक्षित समाधान तथा अपने कार्य में कोई सम्बन्ध न देखते हुए विश्वास से कार्य किया। उन्होंने आशीष *पाने के लिए* इस विश्वास से कि परमेश्वर उन दीवारों को गिरा देगा, दीवारों के चारों ओर चक्कर लगाए। उनका विश्वास अपने कामों में नहीं बल्कि परमेश्वर में था।

यहोशू और इस्राएल को यह समझने की आवश्यकता नहीं थी कि परमेश्वर ने नगर के चक्कर लगाने, जय जयकार करने और नरसिंगे फूंकने को क्यों चुना था। परन्तु, विश्वास रखने के लिए उन्हें यह समझना आवश्यक था कि परमेश्वर दीवारों को गिराने की प्रतिज्ञा कर रहा था। यदि वे परमेश्वर की प्रतिज्ञा को समझे बिना काम करते या किसी और उद्देश्य के लिए नगर के इर्द-गिर्द घूमते (जैसे व्यायाम करने या दौड़ने के लिए अभ्यास करने), तो वे दीवारों को गिराने के लिए परमेश्वर में विश्वास रखकर ऐसा न करते। यदि वे नगर के चारों ओर घूमते, लेकिन प्रतिज्ञा पाने के लिए नहीं, तो उनका कार्य प्रतिज्ञा से जुड़ा हुआ न होता और इसलिए उनके कार्य के आधार पर परमेश्वर में उसकी प्रतिज्ञा को पूरा करने के विश्वास का कार्य न होता। नगर की दीवारों को गिराने के लिए परमेश्वर ने उनके विश्वास के कारण ऐसा किया, इसलिए इसका अर्थ यह है कि यदि वे विश्वास के बिना दीवारों का चक्कर लगाते, तो परमेश्वर उन दीवारों को न गिराता।

इब्रानियों 11 में विश्वास के और भी कई उदाहरण मिलते हैं, परन्तु यह दिखाने के लिए इतने ही काफ़ी हैं कि:

(1) जब परमेश्वर ने आशीष देने के लिए उसमें विश्वास की शर्त रखी, तो उस आशीष को पाने के लिए बिना सोचे-समझे आज्ञा मानने से अधिक विश्वास चाहिए था।

(2) परमेश्वर में विश्वास रखकर कार्य करने वालों को उस कार्य तथा आशीष में सम्बन्ध की समझ नहीं होती थी, परन्तु उन्हें इतनी समझ थी कि यदि वे कार्य करते हैं तो उसके लिए परमेश्वर की क्या प्रतिज्ञा है।

(3) कई बार अपने ही काम से लक्ष्य प्राप्त करने के लिए विश्वास आवश्यक होता था।

(4) कई बार परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली आशीष के लिए परिणाम प्राप्त करने वाले कार्य के बजाय विश्वास की ही आवश्यकता होती थी।

(5) परमेश्वर विश्वास चाहता था जो उसके वचन को पूरा करने की उसकी प्रतिज्ञा के आधार पर कार्य करने से प्रेरित हो।

बलिदानों का अभिप्राय

पुराने नियम में बलिदान लाने वाला न केवल यह समझता था कि कौन सा बलिदान किस लिए लाया जाना है, बल्कि उसे अपने बलिदान के विशेष अभिप्राय अथवा उद्देश्य की भी समझ होती थी।

इस्राएल में अलग-अलग बलिदान भेंट करने के अलग-अलग उद्देश्य थे। कम से कम पांच प्रकार की भेंटें दी जा सकती थीं: (1) होम बलि (लैव्यव्यवस्था 1); (2) अन्न बलि (लैव्यव्यवस्था 2); (3) मेल बलि (लैव्यव्यवस्था 3); (4) पाप बलि (लैव्यव्यवस्था 4); और (5) दोष बलि (लैव्यव्यवस्था 5)। पहले फल, बच्चे के जन्म, बीमारी से शुद्धता व याजक के अभिषेक जैसे अवसरों पर भी भेंटें दी जाती थीं। प्रत्येक भेंट की अलग पहचान होती थी अर्थात प्रत्येक भेंट का विशेष उद्देश्य होता था।

अभिप्राय भेंट का एक अत्यावश्यक भाग होता था। अज्ञानता में पाप करने वाले व्यक्ति के लिए "उस पाप के कारण" जो उसने किया होता था, एक पशु लाना होता था (लैव्यव्यवस्था 4:28)। वह *अन्य उद्देश्यों* के लिए भी भेंटें ला सकता था, परन्तु पाप बलि के मामले में उसे *उसी पाप के लिए* बलिदान लाना होता था जो उसने किया हो। केवल इसलिए बलिदान लाना कि परमेश्वर ने उसकी आज्ञा दी थी, काफी नहीं होता था। बलिदान उसी पाप के लिए लाना होता था जो पाप किया गया हो। यदि किसी ने बलिदान तो दे दिया हो, परन्तु सही कारण से नहीं, तो वह बलिदान देकर परमेश्वर की आज्ञा मानना नहीं, बल्कि उद्देश्य के लिए बलिदान न देकर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन भी होता था।

किसी कार्य के पीछे अभिप्राय विश्वास तथा आज्ञाकारिता का एक भाग था। गलत अभिप्राय से सही काम करने वाला व्यक्ति उतना ही अवज्ञाकारी होता है जितना कि गलत काम करने वाला या जो बिल्कुल ही काम न करता हो।

मन तथा बलिदान

एक और महत्वपूर्ण विचार बलिदान चढ़ाने वाले का *व्यवहार* है। परमेश्वर ने बलिदान की आज्ञा निरर्थक धार्मिक संस्कार और औपचारिकता के लिए नहीं दी थी कि केवल उसकी आज्ञा ही मानी जाए। स्पष्टत:, बलिदान तथा भेंटें लाने वालों से परमेश्वर यह अपेक्षा करता था कि वे इसके अर्थ तथा उद्देश्य को भी समझें। *न* समझने वाले और मन से बलिदान *न* लाने वाले परमेश्वर की बात वैसे नहीं मानते थे, जैसे वह चाहता था कि वे मानें।

परमेश्वर केवल बलिदान से प्रसन्न नहीं होता था, बल्कि उसकी प्रसन्नता टूटे हुए मन तथा बलिदान लाने वाले के पश्चात्तापी मन को चाहने की थी:

क्योंकि तू मेलबलि में प्रसन्न नहीं होता, नहीं तो मैं देता; होमबलि से भी तू प्रसन्न नहीं होता। टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता (भजन संहिता 51:16, 17)।

कोई भी कोमल हृदय व्यक्ति किसी निर्दोष तथा बेकसूर पशु की हत्या के अहसास से कि यह उसके पाप के कारण मारा जा रहा है आन्तरिक पीड़ा को महसूस करता था। इससे उसे अपने मार्ग सीधे करने की प्रेरणा मिलती थी। बहुत सी आयतों से पता चलता है कि बलिदान लेने का अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर बलिदान से प्रसन्न होता था बल्कि उसकी प्रसन्नता इस बात में थी कि बलिदान लाने वाले का उद्देश्य तथा मन सही हो (भजन 40:6-8; 51:16, 17; यशायाह 1:10-14; 66:3; यिर्मयाह 6:19, 20; 7:22, 23; होशे 6:6; आमोस 5:21-24; मीका 6:6-8)।

''देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है ...'' (भजन संहिता 51:6)। सच्चे मन से किए गए बलिदान से परमेश्वर प्रसन्न होता है (नीतिवचन 16:2; 21:2)।

सारांश

कुछेक ही मामलों में परमेश्वर बिना सोचे-समझे विश्वास करने के लिए कहता था, परन्तु साधारणत: वह चाहता था कि उसमें उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार विश्वास किया जाए। ऐसे विश्वास के लिए न केवल सही कार्य, बल्कि परमेश्वर की इच्छा की समझ भी होनी आवश्यक थी, कि जो उसने प्रतीज्ञा की थी उस पर भरोसे के साथ मन की सही इच्छा तथा व्यवहार भी होना चाहिए।